

इलाहाबाद विकास प्राधिकरण

पत्रांक : ६०/प्र०अ०(भवा)/जोग-२/२०१४-१५_दिनांक १४/०३/२०१५

अनुमति-पत्र

यह अनुमति उ०५० नवर नेयोजन तथा वैकास अधिनियम १९७३ को धारा १४ त १५ के अन्तर्गत दी जाती है, जिन्हुं अर्थे अ० ८० न समझना आवश्यक है कि उस मुनि के साथ-साथ मैं जिस पर व्यवसायिक/आवारीय भवन नामांकन कीचूप्ता किया जा रहा है, इससे किसी एकार या किसी अन्य विकास या इसका स्थानीय अधिकारी गा ल्याकर आद्य कर्म के मालिकाना आविकारी गे, जिसके कानेक आसर पड़ेगा अर्थात् यह केन्द्रीय विकास के नियमोंपर के अधिकारी के विकास लाई प्रभाव न होंगा।

बीं भी गारीक चौं पुत्र रम्प गांव रम्पत उल्ला घारा भवन सं० १३४६ पुराना १०५ नया नुजल्ला रोड इलाहाबाद के जोग संभाग (२) के अन्तर्गत दायित्व व्यवसायिक/आवासीय भवन नामांकन के का गे नियमोंके प्रतिक्रिया के अद्यैन प्रदान की जाती है:-

१. उत्तर भवन नियोजन एवं विकास अधिनियम १९७३ की धारा १५ (१) के प्रविधानों ले अनुच्छेद दृष्टि प्रभाव पर प्राप्त होने के परिपूर्ण हो उपयोग/जायंपर्य किया जायेगा, गता नियम एवं विकास उपलब्धि २००८ गे अधिक राज्य-२.१.४ एवं ४.१.८ मे नियांपरिष अधिकारी पर्याप्त प्राप्त अन्य अन्य अधिकारी हैं।
२. यह सीकृति उन्नीस (Provisional) लौटाई के रूप मे हाँगी, नियांपर्य होने के दृष्टिकोण से आप्रवाल Mandatory Clearances/N.O.C की जर्ते नई जर्ते के प्रदात, नियांपरिष जाने जाने हाँगी इमारत-पर्याप्त प्राप्त यहाँ के बार ही इस प्राप्तेर को नास्तिकत उपयोग मे लाया जा सकेगा।
३. इला गर ०१ अद्यै इस लागू होने के बाबा लो हाथ-माय रखने का दायित्व अधिकारी का होगा।
४. रु०८.८। अधिकारी/उपयोग सीकृति अन्यांसन के लियाह ही उल्ला होगा।
५. अवधीनन सुविधाओं के पारिदेश मे नगर आयुक्ता, नगर नियांपरिष की लौटाई हो इसमे नियांपरिष की देश ने जायी विकास देश/प्रतिवन्ध आरेनिया किये जाते हैं तो उल्ला सुविधान/अनुशासन वापेस्करण ले करन आवधीनी होगा।
६. भवनोंपर व्यवसाय गैं कोई ३.५ हे अधिक उत्पन्न देने की विधिये मैं प्रवत्त स्वैत्तु भवनीय व्यावाहय के विकास के अन्तर्गत होती है। यह सीकृति भू-प्रधानिक का अधिकारी प्रदान नहीं करती है। भू-प्रधानिक रस्तों कोई भी विकास रक्षण व्यावाहय/प्रतिवन्ध का द्वारा ही नियांपरिष किया जा सकता है।
७. नियांपरिष सनात नर साली शासन-प्रेषण ए नियांपरिष का यात्रा यात्रा करना होगा तथा अधिकरण गर्द कोई भूला अप्रेषित करता है तो उसे पक्ष को बेन बर्ना होगा।
८. यदि अधिकारी इस पर्याप्त महत्वान्वय सुनना कियायी गयी है अथवा गजत लूपना ही गयी है तो उ०५० नगर नियोजन एवं नियांपरिष अधिनियम १९७३ की धारा १५ (६) के अन्तर्गत मानांकन नियांपरिष करने योग्य होगा।
९. यह सीकृति पत्र केरले पौंच वां वाँ हाँडि के हिंगे है।
१०. भवन नियांपरिष रो दिवि जाती के सदक थी पठरी अथवा लालक या जारी के जिसी भवन (जी) गवान के आप भवन नु०७.८।। अथवा उपरके अकार के लालण डक गई हो को जानि खुंबे तो गुलगामी तेयार हो जाने पर १५ दिन के भीतर वापर दिये विकास प्राधिकरण ने एक लिखित दृच्छा द्वारा दीर लीच कहा तो पहले ही जर्ते उपरने रहने से मरम्मत करकर पूर्वद उपरका दिल्ले नियांपरिष प्राधिकरण को जानोप हो जाव, मैं कहूं देता।
११. गृष्म नियांपरिष के साथ इसका गृष्म वार्षिक विकास अधिनियम १९६४ (इण्डियन इलेक्ट्रिसिटी लौट १९६८) निया ६७ वा उल्लोप्त कियो भी दस्त है त त हैना व्याहिए। यदि नियांपरिष प्राधिकरण के जानकारी मैं ऐसे भावांते गये गए हो एवं नियांपरिष की देश अधिक लौटा रखता है।
१२. आप्रवाल को नियमानुसार विकास प्राधिकरण को एक नियांपरिष की गोंत तक यात्रा एवं तक बन जाने एवं उसके लौप्त होने की यूनान नकार आवाद दोनों से पूर्व देना होगा तथा उस आदानों का नाम शी गेन होगा जिसके नियांपरिष दृच्छा है।
१३. यदि निया ८८ मे नामांकन का उल्लोप्त होना पक्ष गया तो नियांपरिष की गोंत लौट अधिनियम की धारा २८ (१) के अन्तर्गत भवयंपरी भवन की जारीगी।

भावान्यांकन की प्रतीक्षा
नियांपरिष

नियांपरिष :

मुख्य तारिख दिन - १४-३-१५-

प्राप्ति दिनांक १४-३-१५
(प्राप्ति अधिकारी)
OSD/अन्यांपरिष अधिकारी (उ०५० २)

